शिवानंद को मिला 'शिव' मिलन का आनंद

शिवबाबा की मुरली जब हम सुनते हैं तो हम देखते हैं कि उसमें कई शास्त्रों का सार समाया होता है, उन शास्त्रों की बातें हमें अर्थ सहित मुरलियों में मिलती हैं, इसे देखकर मुझे अनुभव होता है कि जैसे ये मुरली पाँचवा शास्त्र है, पाँचवा वेद है। ऐसा कहना है हद के सन्यासी से बेहद के सन्यासी बने शिव के आनन्द में डूबे देगलूर महाराष्ट्र के शिवलिंगेश्वर संस्थान मठ के शिवानंद शिवाचार्य स्वामी जी का । वे परमात्म मिलन के अवसर पर ओमशान्ति मीडिया से रुबरू हुए। उनके साथ हुई बातचीत के कुछ अंश...

आप इस संस्था से कैसे जुड़े?

मैं चार-पाँच साल पहले यहां संत समागम में आया था, तब इस संस्था से मेरा परिचय हुआ। बाद में कई अन्य भी कार्यक्रमों में शरीक होने का मौका मिला और 2013 में बाबा मिलन के लिए आने का अवसर मिला। मैं जब से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा हूँ तब से मुझे ऐसा लगता है कि ये संस्था अलग नहीं है, लेकिन अलग नहीं होते हुए भी ये सबसे अलग है।

जब आप पहली बार बाबा से मिले तो आपको कैसा अनुभव हुआ?

जब पहली बार बाबा से मिलने का सुअवसर मिला, मैं शान्तिवन के डायमण्डल हॉल में बैठा था, बाबा के महावाक्य चल रहे थे। उस समय वहां 25-30 हज़ार भाई बहनें वहाँ बैठे थे, लेकिन वहाँ का वातावरण बिल्कुल शांत था, कोई कोलाहल नहीं था। साथ ही पूरे परिसर का परिक्षण करने के बाद मुझे अनुभव हुआ कि मैं सचमुच परमात्मा शिव से मिलन मना रहा हूँ और ये उनके ही महावाक्य हैं जो इस पल मेरे कानों में पड़ रहे हैं।

इस सत्य ज्ञान की अनुभूति करने के पश्चात् आप अपने मठ में किस तरह इस ज्ञान का उपयोग करते हैं या किस रूप में आप अपने मठ को संचालित करते हैं?

पहले से मैं ज्ञान तो जानता था, मठ में अपने शिष्यों को भी ज्ञान देता था लेकिन मुझे इसका आधार नहीं मालूम था। लेकिन यहाँ आने के बाद मुझे सच्चा आधार मिल गया। मैंने ये जान लिया कि किस आधार द्वारा हम उस श्रेष्ठ मंज़िल तक पहुँच सकते हैं।

आप तीन सालों में कितनी बार बाबा से मिले और परमात्मा का ये जो श्रेष्ठ कार्य चल रहा है इसमें आप क्या और किस प्रकार सहयोग देना चाहते हैं?

मुझे दो बार बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त

हुआ है। परमात्मा के कार्य में हम सहयोगी बन सकते हैं, हम सेवा कर सकते हैं। बाबा तो अव्यक्त है लेकिन व्यक्त में आकर हमें जो बता रहे हैं, जो समझा रहे हैं, उनके जो महावाक्य हैं उनका हम विस्तार करना चाहते हैं। हम जन जन तक ये संदेश पहुँचाना चाहते हैं कि परमात्मा आकर हमें विश्व परिवर्तन के लिए जो ज्ञान दे रहे हैं उसे सुनें, समझें और अपने जीवन में धारण करें।

आपने पहले गीता में पढ़ा होगा और कई पुस्तकों में पढ़ा कि तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तो आपको लगता है परमात्मा ही हमारा माता-पिता और सबकुछ है?

ये गीत, ऐसे वाक्य हमने बहुत पढ़े लेकिन कोई अनुभव नहीं था। यहाँ आने के बाद मैंने अच्छी तरह से यह अनुभव कर लिया है कि परमात्मा ही हमारा सबकुछ है, दूसरा कोई भी नहीं है। यहाँ हम जो भी पढ़ते हैं, उसे अच्छी तरह से अनुभव कर सकते हैं।

क्या आपको ये लगता है कि आपमें जो भी शक्तियाँ हैं जैसे मन, बुद्धि या अन्य शक्तियाँ, वो परमात्मा की देन हैं और उसका उपयोग आप विश्व परिवर्तन के कार्य में करें या उसे किस दिशा में ले जायें?

मुझे लगता है कि मैं अभी तक भटकता रहा, लेकिन अब हम नहीं भटक सकते क्योंकि बाबा ने हमें वो ज्ञान रूपी नेत्र दे दिये हैं जिससे हम अपने लक्ष्य को स्पष्ट देख सकते हैं। अगर इस ज्ञान को पाने के बाद भी कोई भटके या गलतियाँ करे तो ये उसकी बदकिस्मती होगी। जब दिशा मिल गई, सत्य ज्ञान मिल गया तो फिर क्यों भटकना!

आप मुरली सुनते हैं, पढ़ते हैं, ज्ञान समझ चुके हैं, तो क्या आप अपने शिष्यों को भी इस ज्ञान से परिचित करवाते हैं?

हम ज्ञान देने में अधिकतर मुरली के ही शब्दों का उपयोग करते हैं, उन्हें मुरली के द्वारा ही समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन उनकी भावना देखकर। वे मुरली तो नहीं समझ सकते लेकिन उनकी भावना से हमें उन्हें कैसे परिवर्तित करना है, इसपर हम ध्यान देते हैं। पहले जब हम प्रवचन करते थे तो आनंदित होकर नहीं करते थे, कुछ मजबूरियां रहती थी, लेकिन अब हम आनंद से प्रवचन करते हैं, अंदर जो है, जैसा है वही बाहर निकलता है।

इस समाज में हम मार्गदर्शक के रूप में खड़े हैं, हमें वे अपने आदर्श के रूप में देखते हैं, जिस प्रकार माँ जो करती है बच्चे भी वैसा ही देखकर करते हैं, उसी प्रकार गुरु का स्थान भी बहुत बड़ा है, और जो हम करेंगे वो देखकर हमारे शिष्य और समाज के लोग भी करेंगे। इसलिए पहले हमें करना है और करके उन्हें दिखाना है।

रूहानी मुस्कराहट...

हर जलते हुए चिराग की रोशनी को घर मत समझो,
दीये तो मज़ार पर, मंदिरों में भी जलते हैं।
जैसे हर चमकीली चीज़ सोना नहीं होती,
वैसे ही मुस्कराहट भी हितैशी नहीं होती,
मुस्कराहट तो वैश्याओं के होठों पर भी होती है
जो सबकुछ लूट लेती हैं।
रूहानी मुस्कराहट क्या है ?
मुस्कराहट वह है जिसमें रूहानियत हो,
जो जिगर से निकले, दिल को छू ले,
पवित्रता, सुख-शान्ति, शक्ति, संतुष्टता,
शीतलता का अहसास कराये,
मंज़िले मकसूद तक पहुंचाये, बहिस्त की याद दिलाये।
खुदा की रहमत देखिये जो उसने हर इंसान को जन्मते ही मुस्कराहट की सौगात दी है,
पर वह उसे कायम रख न सका, अपने ही संस्कारों व संग दोष के कारण गंवा बैठा,
दुःखी हुआ, फिर भी परमात्मा ने कल्प पहले मुआफिक संगम पर मलेच्छ बच्चों को ब्राह्मण बनाकर अपनाया, भविष्य 21 जन्मों की बादशाही के साथ-साथ वरदानों

से झोली भर दी और कहा –
मेरे मीठे, प्यारे, सकीलधे, लाडले, दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न खुशनसीब बच्चे, सदा याद में रह खुश रहो, खुशियाँ बांटो, यही ज़िन्दगी का सार है, साज़ है, यही सच्चे ज्ञानी-योगी तू आत्मा की पहचान है, शान है, रूहानी सेवा का आधार है, आकर्षण केन्द्र है, प्रभु महाप्रसाद है।
यही पवित्रता, आनंद, सुख-शान्ति की शक्ति की सरिता जब दिल दरिया से उमड़ती हुई आँखों रूपी सीप से छलक कर मोती बन ईश्वरीय गले की माला बना देती है तो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कराती है। जो ईश्वरीय प्यार हमने पाया, वो दुनिया पा नहीं सकती।
अन्त में जब ब्राह्मण एक साथ, एक रस प्रसन्नता की मुद्रा में ``परिवर्तन'' का आह्वान करते हुए सारे संसार की सामग्री की आहुति इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में स्वाहा करेंगे तब महाविनाश के बाद सारे विश्व, भारत में स्वर्णिम युग का अरुणोदय होगा, तब भारत स्वर्ग, सोने की चिड़िया फिर से कहलायेगा जिसमें हम देवी-देवता बनकर राज्य करेंगे। यही है हमारे परमपिता परमात्मा शिवबाबा की कमाल
जिसने हम बच्चों को मुस्कराना सिखाया। यही है वो रूहानी मुस्कराहट, यही है वो रूहानी मुस्कराहट, यही है वो रूहानी मुस्कराहट।

-ब्र.कु. सुभाशचन्द्र,इन्दरापुरम,दिल्ली

सुन्नी-शिमला। दशहरा त्योहार के समाप्ति समारोह में हिमाचल प्रदेश की सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती विद्या स्टोक्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला।

दिल्ली-महरौली। राजयोग का अभ्यास कराने के पश्चात् समूह चित्र में के.वी.सी. के मैनेजर दिनेश कुमार, अन्य मैनेजर्स, ब्र.कु. अनीता व अन्य।

सूरतगढ़-राज.। राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए माउण्ट आबू से ज्ञानामृत पत्रिका की संपादिका ब्र.कु. उर्मिला। साथ हैं ए.डी.एम. ए.एन. मिटाई, नगरपालिका अध्यक्ष कागज छाबड़ा, नारी उत्थान केन्द्र की अध्यक्षा रिजेश सिडाना व ब्र.कु. रानी।

हाजीपुर-विहार। नवरात्रि के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए वार्ड पार्षद मो. मुस्लिम, बैंक ऑफ कॉमर्स के मुख्य प्रबंधक हरी प्रसाद ठाकुर, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती व अन्य।

बड़ौत-उ.प्र.। सर्कल ऑफिसर डिप्युटी एस.पी. सी.पी. सिंह को ईश्वरीय संदेश व सौगात देने के बाद ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. परवेश बहन।